14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों का प्रभाव

श्रीमती प्राची उपाध्याय*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य 14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों का प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधिको अपनाते हुये प्रतिदर्श के रूप में हिन्दी माध्यम के विद्यालय को लिया गया जिसमें 3 शासकीय एवं 1 अर्धशासकीय विद्यालय को चुना गया है इस अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु पारिवारिक संबंधों को जानने के लिए एक स्वंय द्वारा निर्मित प्रश्नावली तैयार की गई तथा बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार को जानने हेतु (डॉ. अशोक शर्मा, श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय) तैयार की गई। सामाजिक व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया। कि 14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को देखने के लिए दो तरह के संबंधों वाले परिवार को लिया गया उच्च पारिवारिक संबंध एवं निम्न पारिवारिक संबंध वाले परिवार/प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकी विधियां जिसमें मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया। तत्पश्चात् हमें इस शोध अध्ययन के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुये उनमें देखा गया कि उच्च पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं का सामाजिक व्यवहार भी उच्च होता है तथा निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं का सामाजिक व्यवहार भी निम्न होता है। इस अध्ययन की शैक्षिक महत्व के रूप में विस्तृत विवेचना की जा रही है शैक्षिक अनुसंधान के संबंध में यह शोध बहुत उपयोगी है।

प्रस्तावना

संसार के सभी मनुष्य शारीरिक, मानसिक, सामाजिक संवेगात्मक आदि दृष्टियों में हमेशा समान नहीं होते हैं। उनकी इस असमानता के कारणों में वातावरण एक मुख्य कारण है। यह माहौल बच्चों को सबसे पहले परिवार से प्राप्त होता है। बालिकाओं को सर्वप्रथम उसके माता प्रभावित करते हैं बालिका प्रारंभ में अपने मूल आदर्श, विश्वास उन्हीं से सीखती है, परिवार ही बच्चों को अपने अनुभवों एवं बेहतर सोच समझ की निपुणता से संतुलित सुदृढ़, आकर्षक व्यक्तित्व एवं स्वरूप में ढालते हैं, ताकि बच्चे अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं की पहचान कर उनका उचित उपयोग कर जीवन में सफल एवं समायोजित हो सकें।

अतः हम कह सकते हैं कि माता पिता तथा परिवार की भूमिका सामाजिक व्यवहार में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है एक बालिका के साथ माता–पिता परिवार जैसा व्यवहार करते हैं जिस तरह के उनके आपस में संबंध होते हैं वही व्यवहार बालक परिवार से बाहर समाज में करता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह किसी ना किसी समाज में जन्म लेता है तथा प्रत्येक समाज द्वारा कुछ विकासात्मक कार्य तथा अधिगम अनुभूतियां प्रत्येक उम्र के लिए निर्धारित की जाती है।

एक व्यक्ति का व्यवहार जब सामाजिक प्रत्याशा के अनुकूल होता है तथा वह समूह द्वारा अनुमोदित भूमिका ठीक तरह से कर पाता है तो उसे पर्याप्त सामाजिक अनुमोदन तथा स्वीकृति प्राप्त होती है।

व्यक्ति का व्यवहार जब समाज की उम्मीद पर खरा उतरता है तब उसे सामान्य व्यवहार कहा जाता है। सामान्यतया व्यक्ति जब ऐसे कार्य करता है जिससे उसकी जरूरत व पसंद पूरी हो। यदि उसके चाल चलन सामाजिक दायरे में है तो इसे अच्छा सामाजिक व्यवहार कहा जाता है। यदि व्यक्ति के कार्य से व्यवहार से सामाजिक उन्नति होती है एवं उसका कार्य संतोषजनक होता है तो उसे सुसंस्कृत कहा जाता है ऐसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति स्वस्थ मानी जाती है और उसके व्यवहार को समाज मान्यता प्रदान करता है।

समाज द्वारा मान्य व्यवहार जैसे – सहयोग, विचारशील होना, उदारता, दूसरों का सम्मान करना बडों की आज्ञा का पालन करना, नम्रता, गलती के लिए अफसोस जताना, सहनशीलता का गुण होना, संवेदनशील व्यवहार करना आदि।

*सहायक प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर(मध्य प्रदेश)

अतः हम अंत में यह कह सकते हैं कि बच्चों के समाजीकरण के प्रथम एजेंट माता पिता ही होते हैं वे जानते हैं कि किस प्रकार से पथ प्रदर्शित होने पर वह कैसा व्यवहार करेगें वे बच्चों को वांछित प्रक्रिया करना सिखाते हैं और बालक अगर उनके द्वारा सिखाये गये व्यवहार को नहीं करेगा तो उसे दण्डित किया जायेगा। इसलिए हम कह सकते हैं कि प्रभाव निर्भरता होने के कारण ही बालिका का समाजीकरण परिवार से होता है तथा उसके सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के व्यवहार का बहुत गहरा संबंध होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रत्येक कार्य को करने में उसके कुछ न कुछ उद्देश्य अवश्य होते हैं, अतः किसी भी विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लेने के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि उसके उद्देश्यों को भी निश्चित कर लिया जाए।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं :–

1. उच्च पारिवारिक संबंधों वाली तथा निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
2. उच्च पारिवारिक स्थिति वाली बालिकाओं का सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।
3. निम्न पारिवारिक स्थिति वाली बालिकाओं का सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत समस्या के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है :–

1. उच्च पारिवारिक एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन के लिए विद्यालयों का चुनाव किया गया जिसमें जबलपुर शहर के तीन शासकीय एवं एक अर्धशासकीय विद्यालय को लिया गया, जिसमें से 145 छात्राओं का चयन किया गया तत्पश्चात् उच्च एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाली 30–35 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। इस प्रकार कुल 65 छात्राओं का चयन अंतिम रूप से किया गया।

शोध उपकरण

1. स्वंय द्वारा निर्मित प्रश्नावली (पारिवारिक संबंधों के जांच के लिए)
2. सामाजिक व्यवहार मापनी (डॉ. अशोक शर्मा, श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय)

शोध अध्ययन में तालिकाओं का निर्माण अध्ययन की आवश्यकताओं, परिकल्पनाओं के स्वरूप तथा प्रयुक्त सांख्यिकी विधियों के अनुरूप किया जाता है।

तालिका क्रमांक 1
उच्च पारिवारिक संबंधों वाली एवं निम्न पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांकों के मध्यमान प्रमाणित विचलन तथा सी.आर.

क्रमांक	समूह	संख्या	X	σ	C.R.
1	उच्च पारिवारिक संबंध वाली बालिका	30	70.1	11.75	4.32
2	निम्न पारिवारिक संबंध वाली बालिका	35	107.62	8.90	

स्वतंत्रता के अंश (df) 63 है C.R. का मान .05 = 2.00 .01 = 2.65

उच्च पारिवारिक संबंधों वाली एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच संबंध दर्शाता हुआ ग्राफ

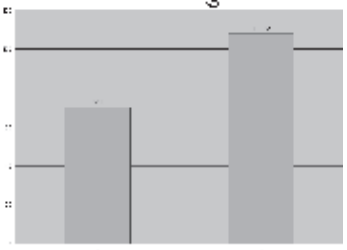

उच्च पारिवारिक संबंध निम्न पारिवारिक संबंध

परिणाम

तालिका से जैसा कि विदित हो रहा है कि उच्च पारिवारिक संबंध वाली बालिकाओं एवं निम्न पारिवारिक संबधं वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के मध्य ब्ण्ट् 14.32 का है जो कि .01 सार्थक स्तर के मान से बडा पाया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त परिणाम से स्पष्ट होता है कि उच्च पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं एवं निम्न पारिवारिक संबंधों वाली बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार के मध्य सार्थक अंतर होता है।

जैसा कि ग्राफ में स्पष्ट हो रहा है दोनों समूहों के बीच अंतर 70.1, 107.62 है इनके बीच में 37.52 का अंतर स्पष्ट दिखाई देता है अर्थात वे छात्र जो उच्च पारिवारिक संबंधों या जिन परिवारों में माता पिता तथा बालिकाओं के बीच सोहाद्र पूर्ण संबंध पाये जाते हैं। जिनके बीच प्रेमपूर्ण संबंध होते हैं, उन बालिकाओं का सामाजिक व्यवहार भी अच्छा पाया जाता है। जैसा कि कोप्लर 1975 के शोध परिणाम में विद्यार्थियों की सक्षमता का श्रेष्ठ अनुमान अभिभावकीय संलग्नता व सामाजिक आर्थिक संसाधन चरों द्वारा लगाया जा सकता है।

शैक्षिक महत्व

14 से 16 वर्ष की बालिकाओं के सामाजिक व्यवहार पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव का अध्ययन करने पर 14 से 16 वर्ष की बालिकायें अर्थात यह उम्र किशोरावस्था के अंतर्गत आती है। यह अवस्था उम्र की नाजुक अवस्था है जिसमें होने वाले परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व के गठन में महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

ई.ए. किलपैट्रिक ने लिखा है, ''इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।''

स्टेनले हाल के अनुसार ''किशोरावस्था बडे संघर्ष तनाव तूफान तथा विरोध की अवस्था है।''

यदि अवस्था के ज्वार का चढाव के समय ही उपयोग कर लिया जाए एवं इसकी शक्ति और धारा के साथ नई यात्रा आरंभ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है। अतः यहां पर 14 से 16 वर्ष की बालिकाओं की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुये इन्हें सही दिशा प्रदान की जाये इनकी शक्ति और उत्कर्ष के साथ ही यात्रा प्रारंभ की जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस उम्र में बालिका का सर्वागीण विकास होता है वे शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक आदि क्षेत्रो में विकास के चरमोत्कर्ष पर होती है कल्पना शक्ति का बाहुल्य तर्क शक्ति की प्रचुरता विरोधी मानसिक दशायें आदि। ये अपने निश्चय के आगे सामाजिक मान्यताओं की भी परवाह नहीं करती। अतः इस समय इनको सही मार्गदर्शन मिलना चाहिए इनके भावी जीवन का निर्माण माता पिता अभिभावकों शिक्षकों और अन्य साधनों पर पूर्ण तरह से निर्भर करता है। इस अवस्था में परिवार बालिका पर प्रमाणिक निर्देशित केन्द्रक के रूप में बाल व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है बालिका से अभिभावक किस प्रकार का व्यवहार करते हैं। बालिका किस प्रकार से उनके व्यवहारों का अनुकरण करते हैं ये प्रश्न ही बालिका अभिभावक संबंधों का प्रत्यक्षात्मक आधार है।

अभिभावकों को अपने बालक बालिकाओं के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति रखनी चाहिए। जहां परिवार में आपस में संबंध मधुर होते हैं वहां बालिकाओं का समाज के साथ समायोजन उच्च श्रेणी का होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Pisula C. (1937) Behaviour Problems of children from High and Low Socio Group's

जैन राशि प्रभा मानव विकास पेज–152

सिन्हा एस.पी. ''अभिभावक स्वीकृति/अस्वीकृति का बालक की कुंठा एवं आवश्यकता पर प्रभाव''

आफर–डेनियल, ओस्ट्रोव किशोरों की आत्म प्रतिभा एवं अभिभावकों द्वारा आत्म प्रत्यक्षीकरण के बीच सह संबंध का अध्ययन

बार्वर व थॉमस (1986) ''माता पिता के सहयोगात्मक व्यवहार के आयाम''

कपिल एच.के. (1980) ''सांख्यिकी के मूलतत्व'' (द्वितीय संस्करण)

माथुर एस.एस. समाज मनोविज्ञान

बैल (1979) ''अभिभावक बालक तथा पारस्परिक प्रभाव''

श्रीवास्तव डी.एन. बाल मनोविज्ञान (आंठवा परिवर्तित संस्करण) Pp 84.85

Martin A.R. 1973 A study of Parental Attitudes and their influence upon personality development Education, Pp 596-608